जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 81 प्रभात चूरू, मंगलवार 19 जुलाई, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

ऑस्ट्रेलिया के सैंट्रल और पश्चिमी भाग के रेगिस्तान में रहने वाले इस अति आकर्षक पक्षी को देखने की इच्छा सभी पक्षी प्रेमियों को रहती है। मध्यम आकार के 34 से 46 सैंटीमीटर लम्बे और 110 से 120 ग्राम वजन वाले ''प्रिंसैस पैरट'' (तोते की एक प्रजाति) अपने खूबसूरत रंगों के लिए विख्यात हैं। लम्बी पूंछ वाले तोतों के जीनस, पॉलिटैलिस, जिसका शाब्दिक अर्थ है ''भव्य,'' के तीन सदस्यों में से एक, प्रिंसैज पैरट का साउथ ईस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के सुपर्ब पैरट (पॉलिटैलिसस्वैनसोनी) तथा दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के ही रीजैन्ट पैरट (पॉलिटैलिस एंथोपैपलस) से निकट संबंध है। सुपर्ब पैरट के चेहरे व गर्दन पर डूबते सूरज जैसी रंगत होती है वहीं रीजैंट पैरट के शरीर पर अलग-अलग रंगों, लाल, नेवी ब्लू व पीले पैच दिखाई देते हैं। प्रिंसैस पैरट भी अपने रंगों के लिए विख्यात हैं। नर प्रिंसैस पैरट में फ्लॉरैसैन्ट ग्रीन, ऑलिव, रोज़ पिंक और पेस्टल वायलैट रंगों का अनोखा सम्मिश्रण होता है। मादा के रंग अवश्य थोड़े हल्के होते हैं। ऑस्ट्रेलिया के पक्षी विज्ञानी क्रिस वॉटसन कहते हैं कि, ये रंग देखने में काफी बेमेल लग सकते हैं, वो इसलिए क्योंकि हम इन पक्षियों को इनके प्राकृतिक आवास में बहुत कम देख पाते हैं। बहुत तेज आवाज करने वाले इन पक्षियों का जीवन काल 30 वर्ष तक हो सकता है। इनकी रेंज वैस्टर्न ऑस्ट्रेलिया से दक्षिणी सीमा तक है जिसमें ग्रेट विक्टोरिआ डैज़र्ट शामिल हैं। प्रजनन के मामलों में ये बेहद अवसरवादी होते हैं, जब भोजन प्रचुर मात्रा में होता है तब ही प्रजनन करते हैं। मादा एक बार में 4-6 अण्डे देती है और 19 दिन तक अण्डे सेने के बाद अण्डों से बच्चे निकलते हैं। पैंतीस दिन बाद बच्चे घोंसला छोड़ देते हैं। वॉटसन कहते हैं कि इन तोतों के आवासीय रेंज में मार्बल गम (यूकलिप्टस गाँगायलोकार्पा) के वृक्ष हैं जिन पर ये घोंसले बनाते हैं। प्रिंसैस पैरट इसलिए भी बर्ड वॉचर्स के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि घुमंतु होने के कारण इन्हें देख पाना दुर्लभ है। स्थिति यह है कि अगर आप एक जगह इन्हें देख लें तो जरुरी नहीं कि दूसरी बार भी वो आपको उसी स्थान पर दिख जाऐंगे। बेहद खूबसूरत, ये पक्षी ऑस्ट्रेलिया के ब्रीडर्स और कलैक्टर्स में बेहद लोकप्रिय हैं।

मुसलमानों के ''मार्जिनलाइज़ेशन'' (अलग-थलग) की अपनी नीति को सफल बना लेगी भाजपा?

भाजपा की रणनीति के सफल होने का एक प्रमुख कारण है, अन्य सैक्युलर पार्टियों का कोई जवाबी नीति तय न कर पाना

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 जुलाई। उप राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनकड़ के चयन के भाजपा के निर्णय के साथ ही, इन अटकलों और अनुमानों पर हो रही चर्चाओं पर विराम लग गया है कि भाजपा इस संवैधानिक पद के लिये किसी मुस्लिम उम्मीदवार का चयन करेगी। उप राष्ट्रपति पद के सम्भावित उम्मीदवारों के रूप में, केरल के राज्यपाल आरिफ़ मोहम्द खान तथा मुख्तार अब्बास नक़वी के नामों की अटकलें लगाई जा रही थीं।

मुख्तार अब्बास नक़वी, जफरूल इमाम तथा एम.जे. अकबर के राज्यसभा-कार्यकाल पूरे हो जाने के बाद, संसद के किसी भी सदन में, भाजपा का अब कोई मुस्लिम सांसद नहीं है। पार्टी ने 2014 के चुनाव में 7 तथा 2019 में 6 मुस्लिम उम्मीदवार खड़े किये थे, लेकिन इनमें से कोई भी चुनाव जीत नहीं पाया था। 2017 तथा 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने एक भी मुस्लिम उम्मीदवार खड़ा नहीं किया था। असम, जहाँ की एक-तिहाई आबादी मुस्लिम है, भाजपा ने 2016 तथा 2021 के विधान सभा चुनावों में कुल मिलाकर 17 मुस्लिम उम्मीदवार खड़े किये थे। इनमें से केवल एक उम्मीदवार ही जीता था। केन्द्र सरकार के 87 सचिवों में से, केवल दो सचिव ही मुस्लिम हैं। संक्षेप में, मुस्लिमों के सम्बन्ध में भाजपा की ''कैंसिल कल्चर'' ने हिन्दू वोटों को उसके पक्ष में एकजुट किया है तथा उसे अत्यधिक चुनावी लाभ पहुँचाया हैं।

मुस्लिम, जो भारत का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है, को देश के सार्वजनिक मामलों से दर किनार किये जाने को इस रूप में भी देखा जा रहा है कि ''धर्मनिरपेक्ष पार्टियाँ'' भाजपा द्वारा दी गई चुनौती का सामना करने में, उसके खिलाफ संघर्ष करने में विफल रही हैं। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इसका ताजा उदाहरण है, राष्ट्रपति पद के भाजपा के उम्मीदवार के पक्ष में विपक्ष के दिग्गजों, ममता बनर्जी, नीतीश कुमार, उद्धव ठाकरे, हेमन्त सोरेन आदि का समर्पण।
- इससे ऐसा लगने लगा है कि, भाजपा के बहुसंख्यक वाद के सिद्धांत व नारे से लड़ने के बारे में विपक्ष ज्यादा गंभीर नहीं है, क्योंकि राजनीतिक दृष्टि से विपक्ष के पास इस बहुसंख्यक वाद का विरोध करने का न तो पूरा मन है और न ही राजनीतिक जवाब।
- यह भांपते हुए भाजपा, मुसलमानों के ''मार्जिनलाइज़ेशन'' की अपनी नीति पर चुस्त कदमों से आगे बढ़ रही है। उदाहरण के लिये, यू.पी. के विधानसभा चुनाव में किसी मुसलमान को टिकट नहीं दिया था तथा आसाम में, जहां एक तिहाई जनसंख्या मुस्लिम है, खींच-खांच कर केवल 17 टिकट दिये मुसलमानों को। केन्द्रीय सरकार में, जहां 87 सचिव पद हैं, केवल दो मुसलमान आई.ए.एस. अधिकारियों को सचिव पद प्राप्त हैं। भाजपा को, ''मुसलमानों'' को कैंसिल करने की नीति से, हिन्दुओं को अपने पक्ष में संगठित करने में मदद मिलती है।
- अतः नहीं लगता कि, भाजपा किसी मुसलमान नेता को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनायेगी।

बी.टी.पी. के रोत और कांग्रेस के भंवरलाल शर्मा मतदान नहीं कर पाए राष्ट्रपति चुनाव में

एन.डी.ए. उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू के रैप्रैज़ैन्टेटिव के तौर पर बीजेपी विधायक जोगेश्वर गर्ग बैलट बॉक्स और निर्वाचन आयोग की टीम के साथ दिल्ली जाएंगे

जयपुर, 18 जुलाई (का.प्र.)। राष्ट्रपति चुनाव के लिए राज्य विधानसभा में हुए मतदान में बीटीसी के विधायक राजकुमार रोत और कांग्रेस के विधायक भंवरलाल शर्मा को छोड़कर सभी 198 विधायकों ने अपना मत डाला। कांग्रेस विधायक भंवरलाल शर्मा की तबीयत है और बीटीपी विधायक राजकुमार रोत का बेटा अस्वस्थ है। साथ ही, उनके किसी रिश्तेदार का निधन भी हुआ है। इसलिए इन दोनों विधायकों ने वोट नहीं डाला। शाम 5 बजे मतदान समाप्त होने के बाद बैलेट बॉक्स पैक कर दिया गया।

एनडीए उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू के रिप्रेजेंटेटिव के तौर पर भाजपा विधायक जोगेश्वर गर्ग निर्वाचन आयोग की टीम के साथ बैलट बॉक्स लेकर दिल्ली जाएंगे। रात 9:10 पर इनकी फ्लाइट है, जो रात करीब 10:10 बजे दिल्ली पहुंचेगी। रात करीब 11:00 बजे तक बैलट बॉक्स को संसद भवन के स्ट्रॉन्ग रूम में रखवाया जाएगा। इसके बाद गर्ग और राजस्थान से गए इलेक्शन विभाग के रिटर्निंग ऑफिसर जयपुर लौट आएंगे।

- फ्लाइट रात करीब 10.10 बजे दिल्ली पहुंचेगी। रात करीब 11.00 बजे तक बैलट बॉक्स को संसद भवन के स्ट्रॉंग रूम में रखवाया जाएगा।
- इसके बाद विधायक जोगेश्वर गर्ग और राजस्थान से गए इलैक्शन विभाग के रिटर्निंग ऑफिसर जयपुर लौट आएंगे।
- भाजपा से निलंबित विधायक शोभारानी चार बजे आईं वोट डालने। शोभारानी को रिसीव करने सरकारी उप सचेतक विधानसभा गेट तक पहुंचे।
- सोमवार को हुए राष्ट्रपति चुनाव के मतदान में इस प्रकार 198 वोट पड़े राजस्थान में।

सोमवार शाम पौने पांच बजे तक 198 विधायक मतदान कर चुके थे। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने करीब 3:45 बजे अपना वोट डाला और भाजपा विधायक शोभारानी कुशवाहा ने करीब साढ़े चार बजे वोट डाला। शोभा रानी ने राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग करते हुए कांग्रेस उम्मीदवार को वोट दिया था इसलिए भाजपा ने उन्हें निलंबित कर दिया था। शोभा रानी वोट डालने आई तो कांग्रेस के उप सचेतक महेंद्र चौधरी उन्हें रिसीव करने विधानसभा के गेट तक पहुंचे।

मतदान के बाद पत्रकारों से बात करते हुए गहलोत ने कहा कि ''मैंने पहले भी कहा कि यह लड़ाई उम्मीदवार को लेकर नहीं होती है। लड़ाई विचारधारा की भी है।

तमाम विपक्ष की पार्टियों ने यशवंत सिन्हा को अपना उम्मीदवार बनाया। मैंने पहले भी कहा अगर एनडीए गवर्नमेंट और भाजपा चाहती, तो उनके सामने 5 साल बाद ऐसा मौका आया था कि वो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

संसद सत्र

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 जुलाई। संसद के दोनों सदन आज पहले ही दिन स्थगित करने पड़े क्योंकि आसन द्वारा महंगाई एवं जी.एस.टी. वृद्धि पर चर्चा किये जाने की मांग को स्वीकार नहीं किये जाने पर कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष ने शोर-शराबा एवं हंगामा करना शुरू कर दिया। ज्ञातव्य है कि 12 अगस्त तक चलने वाले इस सत्र में संसद की कुल 18 बैठकें होनी हैं।

- संसद सत्र का पहला दिन ही विपक्ष के हंगामे की भेंट चढ़ गया, कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी दल महगाई व जी.एस.टी. वृद्धि पर चर्चा की मांग कर रहे थे।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने सदन को पहले तो अपरान्ह 2 बजे तक स्थगित किया ताकि सदस्य राष्ट्रपति चुनाव में वोट डाल सकें, लेकिन बाद में शोर-शराबे को मद्देनजर रखते हुये, सदन को पूरे दिन के लिये स्थगित कर दिया गया। राज्यसभा के सभापति एम.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीट परीक्षा में बंटे गलत पेपर, पेपर छीने, हंगामा

हिन्दी मीडियम को दिए अंग्रेजी, इंग्लिश मीडियम को दिए हिन्दी और अंग्रेजी में छपे पेपर

श्रीगंगानगर, 18 जुलाई (कासं)। शहर में नीट परीक्षा दे रहे विद्यार्थी उस समय हक्के बक्के रह गए जब परीक्षा से महज 10 मिनट पहले उन्हें कहा गया कि पेपर ही गलत बंट गए हैं। उनसे पेपर छीन लिए गए और नए पेपर देने के लिए कहा गया, लेकिन बाद में कोई नया पेपर नहीं दिया गया और अभ्यर्थी परेशान होकर सैन्टर से बाहर निकले। बाद में छात्रों और अभिभावकों ने सैन्टर के बाहर हंगामा किया। यह गड़बड़ी साधुवाली छावनी के आर्मी स्कूल में हुई। हिन्दी मीडियम को दिए अंग्रेजी, इंग्लिश मीडियम को दिए हिन्दी और अंग्रेजी में छपे पेपर।

परीक्षा दोपहर 2 से 5.20 बजे तक होनी थी। परीक्षा खत्म होने से ठीक 10 मिनट पहले विद्यार्थियों को कहा गया कि उनके पेपर गलत बंट गए हैं। ऐसे में उन्होंने गुस्सा जताया। उनका कहना था कि उनका तो कैरियर ही चौपट हो जाएगा, लेकिन सैन्टर मैनेजमेंट ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया । वे लोग स्टूडेंट्स को बार-बार यही कहते रहे कि उनका पेपर दोबारा करवा दिया जायेगा लेकिन बाद में उनके पेपर लेकर उन्हें सैन्टर से बाहर ही भेज दिया गया।

स्टूडेंट्स को लेने आये पेरेंट्स को जब मामले की जानकारी मिली तो उन्होंने छावनी के गेट के बाहर हंगामा कर दिया। असल में यह स्कूल छावनी के अंदर है। वे लोग गेट पर नारेबाजी करते रहे। बाद में जिला पुलिस के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने स्कूल मैनेजमेंट से बातचीत की। देर रात तक पेरेंट्स मौके पर ही जमे हुए थे। उनका कहना था कि पेपर दोबारा होना चाहिए। एग्जाम में हुई गड़बड़ की वजह से कई स्टूडेंट्स मौके पर ही रोने लगे। उनका कहना था कि उनका करियर खराब हो गया है उन्होंने करीब 2 साल तक कोटा और कई अन्य संस्थानों में तैयारी की और इसके लिए कईयों ने ड्रॉप भी किया लेकिन उनका काम नहीं हो पाया। एग्जाम के लिए डिस्ट्रिक्ट कॉर्डिनेटर निफिया सूदन रेड्डी का कहना था कि सैन्टर ने पेपर ठीक से नहीं बांटे ऐसे में यह गड़बड़ी हुई।

- परीक्षा से महज 10 मिनट पहले कहा गया कि पेपर ही गलत बंट गए हैं। पेपर छीन लिए गए और नए पेपर देने के लिए कहा गया, लेकिन बाद में कोई नया पेपर नहीं दिया गया।

तलाक-ए-हसन

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 जुलाई। भारत के मुख्य न्यायाधीश एन.वी. रमना ने सोमवार को उस याचिका की सुनवाई के लिये चार दिन बाद की तारीख दे दी, जिसमें एक महिला पत्रकार ने तलाक-ए-हसन की प्रथा को चुनौती दी है। उक्त मुस्लिम पत्रकार महिला एक नाबालिग बेटे की माँ है।

- तलाक-ए-हसन के एक मामले पर चार दिन बाद सुनवाई करेगा सुप्रीम कोर्ट। यह केस एक मुस्लिम महिला पत्रकार ने दायर किया है।

जब वरिष्ठ एडवोकेट पिंकी आनंद ने इसकी तुरंत सुनवाई का अनुरोध किया तथा कहा कि इस महिला को तलाक का तीसरा नोटिस मिल चुका है, उस समय सी.ए.जे.आई. ने उक्त प्रतिक्रिया दी।

याचिका में माँग की गई है कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हिमालय की सैन्ट्रल काराकोरम पर्वत श्रृंखला में ''ग्लेशियर'' क्यों नहीं पिघल रहे?

यह तथ्य अद्भुत है, क्योंकि दुनियाभर में, यहां तक कि हिमालय के अन्य क्षेत्रों में भी ''ग्लोबल वॉर्मिंग'' के कारण कुछ दशकों से लगातार ग्लेशियर पिघलते और साइज़ में घटते जा रहे हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 जुलाई। भोपाल के इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एण्ड रिसर्च के एसोसिएट प्रोफेसर डा.पंकज कुमार के नेतत्व वाली टीम ने इस रहस्य का पता लगा लिया है कि हिमालय की सैन्ट्रल काराकोरम रेंज के ग्लेशियर क्यों नही पिघल रहे हैं, जबकि हिमालय सहित पूरी दुनिनया में ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं।

उन्होंने इस विशेषण का कारण हाल ही पुनजीर्वित हुए वैस्टर्न डिस्टर्बैन्स (डब्ल्यू.डी.) पश्चिमी विक्षोभ को माना है और इसे ''काराकोरम एनॉमलि'' की संज्ञा दी है

हिमालय के ग्लेशियर भारतीय संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण हैं, खासतौर पर इसलिए कि इनसे निकलने वाली बाहमासी नदियों से करोड़ों लोगों को पानी की जरूरत पूरी होती हैं। ये ग्लेशियर ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण तेजी से कम हो रहे हैं। इससे आगामी दशको में जल संसाधनों भारी दबाव पड़ना अवश्यंभावी हैं।

- भारतीय मौसम वैज्ञानिकों की नवीनतम रिसर्च के अनुसार इस रहस्यमय गुत्थी का कारण है, हाल ही में वातावरण में ''वैस्टर्न डिस्टर्बैन्स'' का पुनः जागृत होना।
- वैस्टर्न डिस्टर्बैन्स के कारण काराकोरम श्रृंखला में सर्दी के मौसम में हिमपात बढ़ रहा है, गत दो दशकों से। इस क्षेत्र में वैस्टर्न डिस्टर्बैन्स से ह्यूमिडिटी काफी बढ़ गयी है, जो सर्दियों में हिमपात बनकर इस क्षेत्र पर छा जाती है।
- सर्दियों में काराकोरम पर्वत श्रृंखला में हिमपात लगभग 27 प्रतिशत तक बढ़ गया है, अतः इस क्षेत्र से जिन ग्लेशियरों का उद्गम होता है, वे पिघल नहीं रहे, बल्कि उनका साइज़ बढ़ रहा है।

इनके विपरीत सैन्ट्रल काराकोरम के ग्लेशियर्स आश्चर्यजनक रूप से अपरिवर्तनीय बने हुए हैं उल्टे कुछ दशकों में थोड़ा बढ़े ही हैं। यह अद्भुत बात ग्लेशियर विज्ञानियों को उलझन में डालती रही हैं और जलवायु परिवर्तन के लिए मानवीय कारकों को जिम्मेवार नहीं मानने वाले भी इस संबंध में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए हैं।

टीम को यह बात विलक्षण लगी क्योंकि यह व्यवहार एक बहुत छोटे क्षेत्र तक ही सीमित प्रतीत होता है और पूरे हिमालय में केवल कुनलुन रेंज ही ऐसी है जहाँ इसी प्रकार के ट्रैण्ड्स दिखाई दे रहे हैं।

अमेरिकन मीटीओरॉलाजिकल सोसायटी के जर्नल ऑफ क्लाइमेट में प्रकाशित अपने पेपर में उनके ग्रूप ने दावा किया कि 21वीं शताब्दी के बाद से ही कराकरम एनोमलि को बनाए एवं गतिमान रखने में ''वैस्टर्न डिस्टर्बैन्स'' के पुनर्जीवन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आक़िब जावेद, जो डॉ. कुमार के पीएच.डी. छात्र तथा इस अध्ययन के प्रमुख लेखक हैं, ने कहा, ''वैस्टर्न डिस्टरबैन्सेज़ (डब्ल्यू.डी.) शीतऋतु में इस क्षेत्र में होने वाले हिमपात के मुख्य कारक होते हैं। हमारा अध्ययन बताता है कि वे कुल मौसमी बर्फबारी के करीब 65 प्रतिशत हिस्से तथा कुल मौसमी वर्षा का करीब 53 प्रतिशत हिस्से के कारक होते हैं तथा इस प्रकार ये आसानी से आर्द्रता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत बन जाते हैं। काराकोरम पर असर डालने वाले डब्ल्यू. डी. की'' प्रैसिपिटेटिंग

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जी.एस.टी.

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 जुलाई। पूर्व पैकेजिंग और लेबल वाली वस्तुओं पर सोमवार से लागू किए गए जी.एस.टी. शुल्क की अधिसूचना में कुछ कमियां छूट गई हैं जिससे टैक्स अदायगी से बचा जा सकता है।

जी.एस.टी. दरों में परिवर्तन के बारे में वित्त मंत्रालय का विस्तृत स्पष्टीकरण कहता है कि अनाज, दालों, आटे आदि का वजन यदि 25 कि.ग्रा. या 25 लीटर से कम है तो किसी पैकेज्ड माल पर अतिरिक्त जी.एस.टी. नहीं लगाया

- पैकेज्ड आटा दाल पर जी.एस.टी. बढ़ी लेकिन दुकानदार पैकेज्ड सामान को अगर फुटकर में बेचें तो जी.एस.टी. नहीं? नई सरकारी अधिसूचना में यह भारी गलती छूट गई है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)